International Journal of Enhanced Research in Educational Development
ISSN: 2320-8708, Vol. 3 Issue 5, September-October, 2015

रिवाडी जिले के राजकीय महाविद्यालयों की शारीरिक शिक्षा गतिविधियों का आलोचनात्मक अध्ययन

संदीप

सहायक प्राध्यापक, राजकीय महिला महाविद्यालय गुरावडा, रिवाडी

प्रस्तावना

स्वस्थ मस्तिष्क स्वस्थ शरीर में निवास करता है और स्वस्थ मस्तिष्क पाने के लिए स्वस्थ शरीर का होना जरूरी है। शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए खेल/शारीरिक गतिविधियो का मुख्य विकल्प है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। और कुछ सीखने की योग्यता उसे अन्य प्राणियों की अपेक्षा उच्च स्थान दिलाती हैं। मनुष्य मस्तिष्क से सुसज्जित है। शिक्षा मनुष्य की बुद्धिमत्ता, शारीरिक, मानसिकता का विकास करती है और उसके जीवन में तरक्की करने मे सक्षम बनाती है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य को ज्ञान अर्जन करने में प्रेरक्कों के दृष्टिकोण प्रदान करती है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार : ''सभी शिक्षा और प्रशिक्षणों का अंतिम लक्ष्य मानव को बनाने का ही होना चाहिए''।

महात्मा गाँधी के अनुसार : सच्ची शिक्षा वह शिक्षा है जो बच्चों के आध्यत्मिक, शारीरिक क्षमताओं एवं बौद्धिक क्षमता को तैयार करें व बढाये।

–शिक्षा का मूल उद्देश्य चरित्र का विकास कर व्यक्ति को उदावता और ले जाना है। अतः हम कह सकते है। शिक्षा एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जो जीवन भर चलती है। शारीरिक शिक्षा, शिक्षा का एक अभिन्न अंग हैं।

विद्यालयीन शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम को महत्वपूर्ण मानते हुए आयु लिंग एवं वर्ग के आधार पर क्रियाओं को निर्धारित कर समावेश किया गया हैं। जिसके लिए विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों जैसीं शैक्षविक संस्थानों के लिए खेल सुविधाओं उपकरणों एवं मैदानों का निर्धारित मापदण्ड तय किया गया है।

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद विज्ञान, शारीरिक शिक्षा के स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित करता है व क्षेत्र का सर्वोच्च शैक्षणिक संस्थान होने के नाते इस क्षेत्र की खेलकूद गतिविधियों में विशेष दायित्व समझकर गहन रूचि रखता है। इस क्षेत्र मे खेल प्रतिभाओं से यथा संभावित परिणाम प्राप्त न होने के कारणों के जानने को जिज्ञासा के तहत लघुशोध करने को आवश्यक महसूस हुई है।

रिवाडी जिले के महाविद्यालयों मे शारीरिक शिक्षा व खेलकूद गतिविधियों का आलोचनात्मक अध्ययन का जो तथ्य परिणाम स्वरूप प्राप्त किये व जिस निष्कर्ष पर पहूचकर जो सुझाव दिये है। वे वास्तव में विचारणीय है।

चूंकि ये लघुशोध प्रबंध समयविधि व अन्य समिति संसाधनों के अंतगर्त पूर्ण किया गया है। इसलिए अध्ययन का नेत्र सुविधा अनुसार रिवाडी जिले राजकीय महाविद्यालय तक समिति रखा गया है।

रिवाडी जिला उतरी अक्षांश और पूर्वी देशांतर रेखाओं में स्थित है। रिवाडी जिले पहचान स्वंतत्रता संग्राम में भाग लेने वाले विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों के रूप में जानने वाले जिलों में से एक है। अनेक सेनानी जिन्होने स्वंतत्रता संग्राम में देश को आजादी दिलाने के लिए भ्रकस प्रयास किया और शहीद हो गए जिनमें से एक नाम रावतुला राय का भी जाना जाता है। इस महान सेनानी के नाम पर रेवाडी जिलें मे खेल स्टेडियम पार्क, धर्मशालाएँ स्थापित किए गये है। अतः हम ये भी कर सकते है कि इस जिले मे डॉक्टर एवं इंजीनीयर एवं सैनिकों की तादात अन्य जिलों से अधिक है।

और यदि वर्तमान स्थिति के बारे मे रेवाडी जिले को संक्षिप्त में कहे तो रेल मार्ग की सुविधाओं को भी नकारा नहीं जा सकता है। जिसमें रेल यात्रा को सुख सुविधा और रेलमार्ग एशिया के नं0 दो पर गिना जाता है। रेवाडी रेल में से दिल्ली, से जयपुर रेल मार्ग पर गुडगांव एवं अलवर के बीच में स्थित है जो इस क्षेत्र का अग्रणीय स्थान है।

शोध प्रविधि

अध्ययन से संबंधित साहित्य में प्रमुख रूप से शारीरिक शिक्षा को मुख्य हैण्डवुल व सहयोगियों के मार्गदर्शन रूप में अध्ययन किया गया है एक अनुसूची प्रश्नावली का निर्माण तथ्यों को एकत्र करने के लिए किया गया है।

1. जिसके मुख्य वर्गो सामान्य जानकारों 2. क्रीडा परिसर के क्षेत्र संबंधों जानकारों 3. सुविधाओं संबंधों जानकारी 4. महाविद्यालया के दैनिक कार्यकाल संबंधों जानकारों 5. महाविद्यालय मे खेलकूद संबंधों जानकारी 6. महाविद्यालयों ख्याति प्राप्त खिलाडियों की जानकारी के अंतर्गत जानकारों या अनुसूची एवं प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र को गई है जानकारी के लिए रिवाडी के सभी राजकीय महाविद्यालयों से 75 प्रतिशत महाविद्यालयों को सुविधानुसार चुना गया है। प्राप्त आकडों का वर्गीकरण एवं सारणीयक किया गया है।

तथ्यों का संकल एवं विश्लेषण

महाविद्यालय के स्वरूप में सभी महाविद्यालयों शैक्षणिक पाये गए है। एकत्र जानकारों के सभी महाविद्यालयों राजकीय है।

महाविद्यालयों को सडक मार्ग से दूरों संबंधित किऐ गए अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि लगभग सभी महाविद्यालय सडक या रेल मार्ग से जुडे हुए है। रिवाडी राजकीय महाविद्यालय को छोडकर सभी महाविद्यालय बस स्टैण्ड रिवाडी से 15 से 25 कि0 मी0 की दूरी पर स्थित है। महाविद्यालयों में 95 प्रतिशत छात्र बस व रेल से आते है 5 प्रतिशत छात्र से भी कम निजी वाहन से महाविद्यालय आते हैं।

महाविद्यालयों में क्या शारीरिक शिक्षा/खेलकूद/ क्रीडा विभाग अलग से होता है बस से ज्ञात हुआ की सभी महाविद्यालयों में विभाग है।

महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा के सहायक प्रवक्ता है। या नहीं 50 प्रतिशत महाविद्यालयों में पद खाली पाए गए है।

वर्तमान पद पर कितने वर्षो से कार्य कर रहे है संबंधित जानकारों चार्ट गई जानकारों प्राप्त हुई जिसके 3 साल से 10 साल तक का अनुभव प्राप्त किए गए है।

महाविद्यालयों मे कितने पद है की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए तो पता चला की किसी भी महाविद्यालय में एक से ज्यादा पद नहीं है। जबकि महाविद्यालयों मे बताए गई जानकारी के अनुसार पद सैक्शन हो नहीं करते है।

क्या महाविद्यालयों मे रखरखाव किया हुआ है ट्रैक उपलब्ध है पूछे जाने पर ज्ञात हुआ को सिर्फ 30 प्रतिशत महाविद्यालयों में ट्रैक है।

क्या महाविद्यालयों में फूटबाल का मैदान है। 50 प्रतिशत से ज्यादा महाविद्यालयों में मैदान नहीं है। कि जानकारी मिली।

क्या महाविद्यालय मे खो – खो या मैदान है। 50 प्रतिशत से ज्यादा महाविद्यलयों में मैदान नहीं है कि जानकारी मिली।

क्या महाविद्यालय में किक्रेट मैदान है। 75 प्रतिशत महाविद्यालयो में मैदान नही है कि जानकारी मिली।

क्या महाविद्यालयों मे वालीवाल मैदान है 25 प्रतिशत महाविद्यालयों में मैदान नही है कि जानकारी मिली।

क्या महाविद्यालय मे हॉकी मैदान है 30 प्रतिशत महाविद्यालयों मे मैदान रही है कि जानकारी मिली।

क्या महाविद्यालयों मे मापन मूल्याकंन उपकरण है। 100 प्रतिशत से महाविद्यालय में उपकरण नहीं है कि जानकारी मिली।

क्या महाविद्यालय में खेल से संबंधित उपकरण है 25 प्रतिशत महाविद्यालय में उपकरणों को कभी मिली है। लघु शोधकर्ता मे मूल्याकंन किया है कि महाविद्यालयों में 50 प्रतिशत से ज्यादा सहयोगी खेलों को बढावा देने मे सहयोग नही करते है।

क्या महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा एक विषय के रूप में पढाया जाता है। मात्र 2 महाविद्यालयों मे ही शारीरिक शिक्षा एवं विषय के रूप में पढाया जाता है। बल्कि किसी भी महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा विषय हो नहीं पढाया जाता इसकी जानकारी मिली है।

निष्कर्ष

शोध विषय ''रिवाडी जिले के महाविद्यालयो की शारीरिक शिक्षा गतिविधियों का आलोचनात्कम अध्ययन''

रिवाडी के शैक्षषिक राजकीय महाविद्यालयों का अध्ययन किया है अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सभी महाविद्यालय गैर आवासी है। महाविद्यालय को सडक मार्ग को स्थिति संबंधी अध्ययन से ज्ञात हुआ को सभी महाविद्यालय सडक मार्ग से जुडे हुऐ है।

महाविद्यालय मे आवागमन के साधन के संबंध मे अध्ययन करने से ज्ञात हुआ की 5 प्रतिशत छात्र निजी वाहनों से आते है 95 प्रतिशत छात्र बस/या अन्य साधन से आते है।

खेल कूद गतिविधियों के लिए महाविद्यालयों में खाली पडें पदों समय–समय पर भरते रहना चाहिए।

सभी महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा एक विषय के रूप से सुचारू रूप से चलाना चाहिए ताकि छात्रों का खेलों मे बढ–चढ कर भाग ले सके।

आवश्यकता अनुसार खेल उपकरण को कमी पाई गई है।

सभी महाविद्यालयों में मैदानों की कमी पाई गई है।

सभी महाविद्यालयों में पदों को कमी पाई गई है।

सुझाव

रेवाडी जिलें के राजकीय महाविद्यालयों को सुझाव दिए गए है।

1. महाविद्यालयों में आवश्यकता अनुसार खेल के मैदान होने चाहिए
2. महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा अध्ययन, प्रवक्ताओं की नियुक्ति की जानी चाहिए।
3. महाविद्यालयों मे खेल के मैदानों के रखरखाव के लिए तकनीकों ग्राउण्डमैन होना चाहिए।
4. महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा एक विषय के रूप में सुचारू रूप से पढाया जाना चाहिए।
5. प्रतियोगिता के पूर्व खिलाडियों को प्रशिक्षण कैंप लगाने चाहिए।
6. प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले खिलाडियों का मनोबल बढाना चाहिए।
7. शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधानों पर जोर दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1– वेस्ट, जे, डब्ल्यू रिसर्च इन इज्युकेशन नई दिल्ली प्रकाशक पैट्रिक हाल ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0 1963

2– राय पारसनाथ अनसंधान परिचय आगरा चावला एण्ड संस, 1997–98

3– कीपल एच.के. अनुसंधान की वीधिया, आगरा हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन 1996–97

4– फिलिप जान ए सर्वे ऑफ फिजिकल एज्युकेशन फ्रैसेलिटी इन सेन्टर स्कूल ऑफ कलकता, 1982

5– कमलेश एम.एल. फिजिकल एज्युकेशन एण्ड फाउण्डेशन पी वी पब्लिसर्स प्रा0 लि0 फरीदाबाद 1988

6– श्री वास्तव कुमार अजय शरीरिक शिक्षा धानिका पब्लिसींग कम्पनी, नई दिल्ली 2008ण

7– खेल मनोविज्ञान डा. एक के मंगल एवं प्रो. एम एम भाटिया, शारीरिक शिक्षा को शिक्षण पद्वितया डा. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय।